ISSN No-2231-5063 Vol.1,Issue.IX/March 2012;pp.1-4

Research Paper

कबीर का समाज–दर्शन

डॉ.दिलीप कोंडीबा कसबे
एम.ए.एम.फील.पीएच.डी.
विज्ञान महाविद्यालय, सांगोला
पिन कोड – 413307

प्रस्तावना :–

कबीर के युग का समाज विच्छृंखल था । साधु वेशधारी लोग मनमानी रुप में पीर और पैगंबर बनकर समाज को पतन की ओर ले जा रहे थें । सामाजिक रुढिवाद, विकृत परंपरा, ढोंगी ,पाखंडी तथा बाहयाडंबर के कारण समाज मृतप्राय - सा हो रहा था ।

कबीर ने बाहयाचार का विरोध करते हुए बताया है कि हिंसा कर, अधर्म कर, शोषण कर समाजोननती नही हो सकती । वेद - पुराण पढकर समक्ष लेने की तथा राम नाम का वास्तविक रहस्य जानने की अनिवार्यता है ।

कबीर ने समाज की कमजोरियों का ढोल बजा - बजाकर उसकी निंदा की है, और अच्छे मार्ग का उपदेश करते हुए कहा है कि - " दिल महि खोजि दिलै खोजहु इहई रहिमां रांमा ।" (नही)

कबीर को अधिकांश मात्रा में तत्ववाद की भी अच्छी जानकारी थी। उन्हों ने धनसंचय तथा मक्खि के उक्ति आदि का वास्तविक महत्व बताया है।

कबीर ने मानवातावादी दृष्टिकोण से जन - आंदोलन चलाया । उस समय के भारतीय समाज में प्रचलित समस्त अंधविश्वासों, रुढि-प्रथाओं, सामंतो तथा शासकों की चिरफाड की ।

उन्हों ने सहज दिनचर्या और धार्मिक दिनचर्या को अलग न मानकर 'समष्टि' का मूलमंत्र भी की है ।

कबीर ने समाज,धर्म, संस्कृति, राजनिती,अर्थनिती, शोषण तथा सारी विकृतियों का खंडन किया । वे सर्व धर्म समनवयकारी सुधारक थे । इसलिए ईसाई मिशनरियों ने उनका 'कबीर बीजक' ग्रंथ पढा । वे मानव धर्म की रक्षा करनेवाले थे । संक्षिप्त में जातिगत, कुलगत, संप्रदायगत जैसी विशेषताएँ उनकी दृष्टि से गौण है। याने समाज दर्शन और खंडन की वृत्ति को अपनाकर समाज सुधार के हेतु जो काव्य उक्तियाँ उन्होंने कही, उनसे समाज में समानता की, एकता की भावना का प्रचार हुआ । इस प्रकार कबीर के विविध दोहों से उनके समाज का समाज दर्शन होता है ।

कबीर खिचडी भाषा के ज्ञाता है । मानव समाज के प्रणेता है । सर्व धर्म समन्वययवादीहै । संक्षिप्त में उन्होंने मानव समाज के कमजोरियों का ढोल किस प्रकार बजाया है, जिसका ऊहापोह मैने अपने इस शिर्षक में विनम्रता से करने का प्रयास किया है ।

१) समाज किसे कहते है ?

विश्व - विख्यात मनीषी अरस्तु के अनुसार एक समाज प्रिय प्राणी है। उस मनुष्य को अपना मानवीय अस्तित्व बनाये रखने के लिए अन्य मनुष्यों के साथ समन्वय - सामंज्यस्य वृत्ति से परम आवश्यक हैं। वह अपने आस -पास के मनुष्यों के साथ सामाजिक संबंध स्थापित करता है । अतः मनुष्य के पारस्पारिक संबंधो के 'जाल' को 'समाज' कहते है।

साहित्य समाज का दर्पण है। शिवाय साहित्य और समाज का अन्योंन्याश्रित अटूट संबंध भी है। कबीर समाज -दर्शन की आधारशिला अनेकता में एकता की स्थापना करनेवाला अव्दैतवाद है। क्योंकि कबीर के युग का समाज विच्छृंखल था। साधु वेशधारी लोग मनमानी रुप में पीर और पैगंबर बनकर समाज को पतन की ओर ले जा रहें थे । सामाजिक रुढिवाद, विकृत परंपरा, ढोगी पाखंडी तथा बाहयाडंबर के कारण समाज मृतप्राय -सा हो रहा था । परिवर्तन अस्वीकार के कारण किस मार्ग की ओर जाये यह सोच सकने की सामर्थ्य समाज में शेष नही रह गई थी ।

किंतु कबीर जिस समय हुए थे उस समय भारतीय समाज के संचालकों मैं ' कथनी' और 'करनी ' में बडा सोचनीय मामला उपस्थित हो गया था। हिंदू समाज का संचालन (नियमन) करनेवाला ब्राम्हण वर्ग गुणकर्मानुसार न रहकर वास्तवत:कुल -जन्मानुसार हो गई थी। संक्षेप में कबीर के समय झुठे अभिमान तथा बाहयाचार के थोथे जंजाल के कारण हिंदू समाज का पतन हो रहा था ।

२) बाहयाचार का विरोध :-

कबीर अनुभूति को महत्व देनेवाले थे । उनमें सत्य तक पहुँचने की विचार प्रवणता थी । उन्हों ने हिंदू -समाज की कुल अभिमान और बाहयाचार जैसी कमजोरियों पर कडा आघात किया । कबीर कहते है-

" पंडित भूले पढि गुन्य बेदा,आप न पावै नाना भेदा ।
कुल अभिमान विचार तजि, खोजौ पर निखान ।
अंकुर बीज नसाइगा, तब मिले बिदेही थान ।।" १

इससे यह स्पष्ट है कि पंडित वेदों को पढकर गुनकर भी भ्रम में पडा हुआ है। अपना भेद आप नही जानता । अपने गुणों पर गर्व करता है, कुल अभिमान पर भाव रखकर निष्काम कर्म नही करता है। मेरी राय के अनुसार कबीर यह कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार भूना हुआ बीज बोने से अँखुए नही फुटते उसी प्रकार निष्काम कर्म करने से ही जन्म -मृत्यु के बंधन से मोक्ष मिलता है, ऐसा शास्त्रों में बताया हैं । अर्थात कबीर के मतानुसार राम नाम ही तत्ववाद का सार है । उसे छोडकर अन्य सब बंधन के कारण है।

कबीर समाज का दर्शन करते हुए कहते है - अब तुम ब्राम्हण हो, मैं काशि का जुलाहा (क्षुद्र) हूँ किंतु मैं पुर्व जन्म में ब्राम्हण था । केवल राम की सेवा में कमी (गलती) हुयीं, इसलिए शायद मुझे सजा देने हेतु जुलाहा बना दिया होगा । यहाँ मैं संक्षेप में कहूँगा कि कबीर की इस गुढ व्यंजना को समझ लेने की अनिवार्यता है। जैसे वेद-पुराण पढकर, उसे समझकर , राम नाम का वास्तविक रहस्य जानने से ही पार लग सकते है। न की हिंसा कर, न की अधर्म कर मुनिवर बनना, यहाँ स्पष्ट हैं कि कबीर ने बाहयाचार का विरोध किया हैं ।

३) मुसलमानों के बाहयाचार का खंडन :-

कबीर ने समाज में फैलनेवाले अवांछनीय मामलों को नष्ट करने के लिए बाहयाचार का खंडन किया है। कबीर ने मुसलमानों की हिंसा और जुल्म का खंडन किया हैं । साथ ही खून बहाना, मिसकीन (निरीह) कहलाना उन्हें ठिक नही लगता था । जैसे " खून करे मिसकिन कहावे गुनही रहै छिपाए।"२ यहाँ दोष दर्शन कराने के साथ-साथ खंडन की जो प्रवृत्ति कबीर ने अपनायी, वह बेजोडे थी । यही कारण हैं कि अनेक आलोचकों को उनके सृजन में साहित्यिक कोमलता के दर्शन नही होते । समाज को नया मार्ग दिखला सकने की क्षमता न रखने के कारण शिथिल हो जाते थे । कुछ समाज सुधारक कल्याणकारी मार्ग की ओर चलनेवाले भी थे ।

कबीर समाज की कमजोरियों को ढोल -बजाकर प्रकट करते है, उसकी निंदा करते है और साथही स्वस्थ मार्ग का निर्देश करते हुए कहते है - " दिल महि खोजि दिलै खोजहु इहई रहीमां रांमा ।"३(नही)

४) कबीर और हिंदू तत्ववाद :-

कबीर को अधिकांश मात्रा में तत्ववाद की भी जानकारी थी । कबीर का अध्ययन करनेवाले आचार्य हजारीप्रसाद व्दिवेदी का मात्र मत है की - " ऐसा नही जान पडता की उन्होंने मुसलमान धर्म के बाहयाचारों के शिवाय उसके किसी अंश की गहरी जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा की हो अर्थात व्दिवेदी जी मी मान्यता है कि कबीर को मुसलमान धर्म के तत्वज्ञान की गहरी जानकारी नही थी । मैं वैयक्तिक व्दिवेदी के इस मत में सहमत नही हूँ । यहाँ मैं डॉ. आनंद कुमारस्वामी के कथन का हवाला देकर कहूँगा कि, " हिंदू तत्ववाद में कबीर की पैठ गहरी हैं, बल्कि यह भी कहा जा सकता हैं कि पर्याप्त जानकारी से ही कबीर की अनेक उक्तियों का वास्तविक महत्व उद्घाटित हो सकता है। इससे स्पष्ट होता हैं कि कबीर को धर्म, समाज आदि तत्वज्ञान का कितना ज्ञान है ।

५) कबीर का मानवतावाद :-

शंकराचार्य का अव्दैतवाद, रामानुजाचार्य का विशिष्टाव्दैतवाद तथा सुफियों की प्रेमधारा को लेकर कबीर ने मानतावादी दृष्टिकोण से जन-आंदोलन चलाया । उन्हों ने उस समय के भारतीय समाज में प्रचलित समस्त अंधविश्वासों, रुढि -प्रथाओं तथा मिथ्याचार व्दारा प्रचारित -ग्रसित सामाजिक विषमताओं के दर्शन कर सभी पाखंडों , सामंतों, तथा शासकों पर व्यंग्य- प्रहार कर भौतिक ऐश्वर्यो पर आधारित सभी

Please cite this Article as : *डॉ.दिलीप कोंडीबा कसबे ,कबीर का समाज–दर्शन* : Golden Research Thoughts (March ; 2012)

झूठे अभिमान कि चिरफाड की । जैसै - " सामाजिक शोषण, अनपचार और अन्याय के विरुध्द संघर्ष आज भी कबीर का काव्य एक तीखा अस्त्र है। कबीर के हम रुढिगत सामंती दुराचार और अन्यायी सामाजिक व्यवस्था के विरुध्द डटकर लडना सीखते हैं और यह भी सीखते हैं कि विद्रोही कवि किस प्रकार अन्ततक शोषण के दुर्ग के सामने अपना माथा उँचा रखता हैं।"६ यहॉ स्पष्ट है, कबीर ने मानवीय समाज के वैषम्यता का दर्शन कराया हैं।

६) सहजधर्म :-

कबीर ने मनुष्य की सहज दिनचर्या और धार्मिक दिनचर्या अलग व मानकर 'समदृष्टि इस मूलमंत्र पर जोर दिया । इसी कारण संघर्ष, विवाद तथा विषमताएँ समाप्त की-सी स्थिति निर्माण होती है ।

जैसे - " आपा पर सम चीन्हिए तब दीसै सरब समान ।

इहिं पद नरहरि भेटिए तू छंडि कपट अभिमान रे ।" ७

अर्थात - कबीर ने इसी को मृत्यू पर जीवन का विजय माना है। इसी के संग ही संग नैतिक संयम जिनमें सत्य, अहिंसा, परोपकार, ब्रम्हचर्य, इंद्रिय- निग्रह , सत्संग आदि प्रधान माना हैं। यहॉ व्यक्ति समाज की ईकाई हैं, जिसकी ओर कबीर ने समाज उन्नयन की दृष्टि से देखा है। यही उनका सहज धर्म है ।

७) आर्थिक दृष्टि :-

मानवीय समाज में संचय वृत्ति आर्थिक वैषम्य को जन्म देती हैं जिससे संघर्ष पैदा होता है। समाज के इस अर्थिक पहलू को कबीर ने भी पुष्टि दी हैं। किंतु उन्हों ने मैं मैं, मेरी मेरी जैसी भावना का विरोध किया है। उन्हों ने कहा हैं - " मेरी -मेरी झूठ है, क्योंकि जब मरने के बाद कटिवस्त्र तथा कटिमूल तक तोडकर निकाल लिए जाते है तो यहॉ अपना क्या है?"८ यहॉ सच्चे अर्थों में कबीर आर्थिक (धन) संचय की चिंता बेकार समझते हैं। सिर्फ पेट भरनेवाले साधुवृत्ति पर कसकर प्रहार करते है, क्योंकि वे स्वामी को सर्वेसर्वा मानते हैं।

८) कबीर और नारी :-

समाज दर्शन में नारी वर्ग काफी दिनों से ही उपेक्षित और स्वत्वहीन रहा हैं। मनु तथा शंकाचार्य ने भी नारी की काफी भर्त्सना की है।

कबीर ने भी नारी की भर्त्सना की है किंतु उन्हों ने सिर्फ नारी के पतिव्रता, सतीरुप की प्रशंसा भी की हैं।

९) कबीर - एक समाज सुधारक

कबीर समाज सुधार की दृष्टि से ' सहज भक्ति की संजीवनी' है। समाज,धर्म, संस्कृति , राजनिती , अर्थनिती आदि का उन्हों ने खंडन ही नही किया बल्कि सामाजिक पतन और सारी विकृतियॉ नष्ट करने हेतु समाज परिवर्तन का झंडा फहराया। इसी कारण कबीर पंथियों के अतिरिक्त ईसाई मिशनरियों ने उनका ' कबीर बीजक' ग्रंथ प्रथमतः पढा । कबीर विदेशों में माहिर हुए। अनेक विद्वान उन्हें 'सर्वधर्म -समन्वयकारी सुधारक' मानने लगे । वे हिंदू - मुस्लिम धर्मों की कुरीतियॉ दिखाकर एकता और समझौते का मार्ग दिखाना चाहते थे । कुछ लोग उन्हें कोरा समाज सुधारक मानते थे, जो सरासर गलत हैं । उनके अनुसार मनुष्य न हिंदू हैं, न मुसलमान वा ना अन्य धर्म के, मनुष्य केवल मानव धर्म की रक्षा करनेवाला मनुष्य हैं। यहॉ संक्षिप्त में मैं कहूँगा कि जातिगत, कुलगत तथा संप्रदायगत जैसी विशेषताएँ उनकी दृष्टि से गौण है, इसलिए कबीर एक निर्भिक, निस्वार्थी, समाज सुधारक थे, इसमें कोई गैर नही है,

संदर्भ संकेत :-

१) डॉ.गोविद त्रिगुणायक
डॉ.पुष्पपाल सिंह कबिर ग्रंथावली - स्टीक, पृष्ठ - ५४८

२) कबीर ग्रंथावली, पद -१७७

३) कबीर ग्रंथावली, रमैणी-६

४) आ.हजारीप्रसाद व्दिवेदी - कबीर,पृष्ठ - १३५

५) डॉ.आनंद कुमारस्वामी - विश्वभारती पत्रिका, खंड- १
अंक-१ जनवरी,१९४२
ई.

६) श्री.प्रकाशचंद्र गुप्त - हिंदी साहित्य की जनवादी चेतना,
डॉ. रामजीलाल (सहायक) कबीर-दर्शन,पृष्ठ-४३५

७) कबीर ग्रंथावली

८) कबीर ग्रंथावली, पद -६५

९) डॉ.चंद्रदेव राय- कबीर और रैदास : एक तुलनात्मक अध्ययन

१०) डॉ.कृष्णदेव शर्मा-कबीर वाणी सुधा सार

११) डॉ.पुरुषोत्तम वाजपेयी- कबीर और जायसी

१२) संपादकः राजेंद्र यादव - हंस,६जनवरी,२०१०

Please cite this Article as : *डॉ.दिलीप कोंडीबा कसबे ,कबीर का समाज–दर्शन* **: Golden Research Thoughts (March ; 2012)**